Date 09/03/19 Ch. 2 C

घुमंतु या खानाबदोश
(NOMADS)

यह जनजातियाँ मुख्यत: बिहार में पाई जाती है इन जनजातियों में (1) बहेलिया (2) लोहा (3) रजवार (4) मुसाहार (5) बेदिया

1. बहेलिया :— बिहार की घुमंतु जनजातियों में बहेलिया नाम स्वत: ही पहले आया है। यद्यपि इस जनजाति का मुख्य केन्द्र बेतर प्रदेश तथा पश्चिम बंगाल इस जनजाति के लोग केवल मात्र शिकार करके एवं पक्षियों को पकड़ कर के अपनी जीविका कमाते है। बिहार में इन्हे मूल भी कहा जाता है। जिन्हें रिजेल ने "दोसाह" जनजाति की एक शाखा माना है परन्तु वर्तमान समय में ये दोनों जनजातियाँ एक-दूसरे से कोई सम्पर्क नहीं रखती है। वास्तव में ये सभी जनजातियाँ और जातियाँ सांस्कृतिक प्रजातिय तौर परस्पर इतने अधिक मिलते-जुलते है कि इन्हे एक-दूसरे से अलग करना कठिन है।

बहेलिया लोग चीड़ि मारी से सम्बन्धित होते हुए भी इनकी गिनती अपवित्र लोगों में नहीं होती है। वे अपने शिकार की खोज में एक जंगल से दूसरे जंगल में घूमते रहते है। इसीलिए इनका पारिवारिक जीवन स्थिर नहीं होता है। ये अक्सर अपने बीवी बच्चें को निकट के गाँव में छोड़कर चिड़ीमारी या शिकार करने निकल पड़ते है। अधिकांश बहेलिया हिन्दू धर्म जो लोग हिन्दू धर्म को मानते है तो कुछ ईस्लाम धर्म जो लोग हिन्दू धर्म अवलम्बी है वे अपने धार्मिक कार्यों में हिन्दू पुरोहितों को बुलाते है। क्योंकि बहेलिया लोगों को अपवित्र नहीं माना जाता है। इस कारण पुरोहितों को भी ऐसे अवसर पर आने में कोई कठिनाई नहीं होती है। बहेलिया लोग पितृवंशीय एव पितृस्थानीय होते है। विवाह के बाद पत्नी को अपने पति के घर आकर रहना होता है किन्तु कुछ स्त्री बहेलिया स्त्रियाँ तो अपने पति के साथ-साथ घुमती

Page No.

शिकार करती दिखाई देती है। परन्तु अब इन लोगों का सम्पर्क सभ्य आधुनिक समाज में निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसके फलस्वरूप वे अपने घुमंतू जीवन को धीरे-धीरे त्याग कर गाँव में स्थाई रूप में बसते जा रहा है। इन गाँव में वे लोग खेतिहार, मजदूर, घरेलू, नौकर आदि के रूप में कार्य करते हैं और अपनी जीविका उपार्जन करते हैं।

2. लोहा :— इस घुमंतू जनजाति के लोग बिहार से लेकर पश्चिम बंगाल तक बसें हुए हैं और इनकी जनसंख्या लगभग 50 हजार है। ये "सबर" जनजाति के वंशज माने जाते हैं। जो मूल रूप से दक्षिण उड़ीसा के पहाड़ियों में निवास करते हैं। वे बंगाल, उड़िया और मुण्डारी भाषाओं की एक मिश्रित बोली बोलते हैं। वे जंगलों में घुमंतू हुए फल-मूल इकट्ठा करते हैं। जो लोधा गाँव में बस गये हैं वे खेतों में मजदूरी करके अपनी जीविका कमाते हैं।

लोधा जनजातिय सामाजिक संगठनों के आधार गोत्र है। यह गोत्र लोधा जनजाति का एक बहिर्विवाह विभाजन होता है। जिसके सदस्या अपनें को कुछ समान बन्धनों द्वारा एक-दूसरें सें सम्बन्धित रखते हैं। इस सम्बन्ध का आधार एक समान्य पूर्वजों का वंशज होनें का विश्वास और एक समान्य टोटम होता है। इनमें इस प्रकार के 9 गोत्रें पायें जाते हैं। जिनमें सें 8 गोत्र के लोग सामान्य टोटम के आधार पर अपने टोटम समूह के विवाह सम्बन्ध स्थापित नहीं करते हैं। अर्थात् अपने जीवन साथी का चुनाव अपनें टोटम समूह सें बाहर किया जाता है।

लोधा लोगों को यह जनजाति को एक अपराधी जनजाति के अंतर्गत माना जाता है। वास्तव में आर्थिक आवश्यकताओं में इन्हे अपराधी बनने को मजबूर कर दिया है। ये लोग अपनी जीविका

Date ___/___/_____

के लिए जंगलों में प्राप्त होने वाली खाने-पीने की चीजों पर निर्भर थे। पर धीरे-धीरे इन लोगों को जंगलों को जैसे-जैसे साफ कर के वहाँ की जमीन का उपयोग जैसे-जैसे इन लोगों को जंगलों को खेती के काम में होने लगा, वैसे-वैसे भोक्ता जनजाति के लिए जीविका उपार्जन के साधन सीमित होते चले गये। अतः भुखमरी से अपने को बचाने के लिए गैर कानूनी तरीकों से जीविका उपार्जन का रास्ता खोजना ही उनके लिए एक मात्र विकल्प रह गया। क्योंकि उनकी अशिक्षा एवं पिछड़ेपन ने उन्हे और किसी तरह के काम के लायक नही छोड़ा।

Date 19/03/14

3. रजवार :— यह जनजातिय समूह बिहार तथा पूर्वी अवध में बसा हुआ है एवं वर्तमान समय में मेहनत, मजदूरी करके अपनी जीविका का पालन करता है। रजवार लोगों की सामाजिक स्थिति एक अन्य जनजातिय समूह 'मुसाहार' से ऊँची होती है। वे हिन्दू धर्म को मानते है एवं धार्मिक कर्मकाण्डों के संपादन में ब्राम्हण पुरोहितो की सहायता लेते है पर साथ ही वे अपने परंपरागत जनजातिय संगठन को बनाये रखते है। रजवार जनजाति में पितृवंशीय गोत्र संगठन पाया जाता है इसके अंतर्गत एक पुरुष उसके भाई उन पुरुषों की सन्तानें और उसकी भाईयों की संतानें सम्मिलित होती है परन्तु बहनोंकी संताने ऐसे गोत्र में नही आती है।

रजवार लोग एक विवाहित होते है उनकी दयनीय आर्थिक स्थिति उन्हे बहु विवाह करने की क्षमता ही नहीं प्रदान करती स्त्रियों की स्थिति पुरुषों की तुलना में निम्न होती है पर वे घर पर या खेतों में पुरुषों के साथ-साथ काम करती है कुछ रजवारों के पास अपना खेत है पर अधिकांश रजवार दूसरों के खेतो पर ही मजदूरी करता है। सामाजिक तौर पर विवाह-विच्छेद तो

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

बहुत कम पाया जाता है पर पति द्वारा पत्नी या तोहिफ पत्नी द्वारा पति का परित्याग, कोई सामान्य घटना नहीं मानी जाती है।

5. मुसाहार :— जैसा कि उपर्युक्त रजवार जनजाति के विवरण से स्पष्ट है कि रजवार जनजाति के लोग मुसाहार जनजाति से श्रेष्ठ समझते हैं एवं खाने-पीने तथा विवाह आदि के मामले में उनसे सामाजिक दूरी बनाये रखते हैं। इसका कारण बताते हुए रजवार लोग कहते हैं कि मुसाहार लोग मूस अर्थात् चूहा खाने वाले हैं इसीलिए निकृष्ट हैं परन्तु वास्तव में कोई मानवशास्त्रीय प्रमाण नही है जिसके आधार पर यह कहा जाए कि मुसाहार जनजाति के लोग चूहा भक्षित है।

स्थिर जीवन के आधार पर मुसाहार जनजाति को दो मोटे भागों में बाँटा जा सकता है प्रथम श्रेणी के अंतर्गत वे मुसाहार है जो आज भी घुमंतु जीवन व्यतीत करते है और अपने पशु एवं बीवी-बच्चों सहित एक जंगल से दूसरे जंगल को अपनी जीविका उपार्जन हेतु जाते रहते है ये जंगल से बाहर तम्बू लगाकर बीवी-बच्चों को वहीं छोड़ स्वयं झुंड बनाकर जंगल के अन्दर जाकर शिकार करते है तथा अन्य जंगली चीजों जैसे :- शहद, फल-मूल, लकड़ी, जड़ी-बूटी, आदि को इकट्ठा करके इन्हे आस-पास के गाँवो में जाकर बेच देते है इसी से इनकी जीविका चलती है। दूसरी श्रेणी के अंतर्गत वे मुसाहार आते है जो गाँवो में बस गये है। और स्थायी परिवारिक जीवन व्यतीत करते है ये लोग बहुत गरीब होते है। इनके पास खेती-बारी करने के लिए स्वयं को जमीन नहीं होती है इस कारण वे दूसरों के खेतो में साधारण श्रमिक के रूप में कार्य करते है।

मुसाहार जनजाति हिन्दुओं के कुछ

Date __/__/____

देवी-देवताओं को भी मानती है पर साथ ही अपनी जनजातीय पूजा प्रार्थना को भी छोड़ नहीं है। प्रेत आत्माओं का डर उन्हें सदा रहता है और उन्हें खुश करने के लिए बलि चढ़ाना एक साधारण बात है। जादू-टोना, झाड़-फूक पर भी खूब विश्वास करते हैं, इनकी अपनी जनजाति में भी जादू-टोना, झाड़-फूक करने वाले विशेषज्ञ वृद्ध होते हैं।

5. बेदिया :— बिहार के एक अन्य जनजाति बेदिया है इसकी दो श्रेणी है एक तो घुमंतु और दूसरी स्थायी जीवन बिताने वाली। इस संबंध में रोचक बात यह है कि घुमंतु बेदिया लोगों को अनुसूचित जनजाति माना जाता है जब कि स्थायी जीवन बिताने वाले बेदिया लोगों को अनुसूचित जनज जाति की मान्यता प्राप्त है ये जनजाति पेशों के आधार पर अनेक उप-भागों में बाँटी हुई है। यदि एक समूह कालाबाज है तो दूसरा को जादूगर के रूप में जाना जाता है और दूसरा चीड़ीमार एवं शिकारी के रूप तो तीसरा सपेरा के रूप में विख्यात है जिन बेदिया लोगों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति अच्छी है वे लोग किसान के रूप में गाँवों में बस गये हैं। मानवशास्त्रीय प्रमाणों से ऐसा प्रतीत होता है कि बेदिया जनजाति मध्य भारत के पूर्व भाग में बसे द्रविड़ भाषा बोलने वाली जनजातियों से सम्बन्धित है

वर्तमान समय में बेदिया जनजाति के अनेक लोग अपनी जीविका उपार्जन के लिए मछली पकड़ने के जाल एवं काँटा, सूई, जस्ता के आभूषण आदि बनाते हैं वे हिन्दू ही होते हैं पर कुछ लोगों ने धर्म परिवर्तन करके इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया है।

वास्तविक स्थिति यह है कि वर्तमान समय में यातायात एवं संचार के साधनों में प्रगति होने से शिक्षा, आधुनिक तकनीकी प्रगति तथा सरकारी एवं गैर-सरकारी तौर पर जनजातीय कल्याणकारियों में निरंतर

Page No. ____

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

विस्तार होने के कारण कोई भी जनजाति आज सभ्य समाज के सम्पर्क से पूर्णतः अछूता नहीं है। इसके फलस्वरूप जनजातीय जीवन समाज एवं सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं में परिवर्तन की एक धारा फूट चुकी है और उस धारा प्रवाह में जनजातीय जीवन की संस्कृति का मूल रूप बह गया है। शायद अब यही स्वाभाविक भी है।

Stop

Scanned with CamScanner